20/07/2020

Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

Mention the major types of social tension.

सामाजिक तनाव के विभिन्न प्रकारो का वर्णन करें।

सामाजिक तनाव किसी भी देश के लिए एक जटिल समस्या है। इससे समुदाय, देश या विश्व को कभी-कभी काफी छति उठानी पड़ती है। इससे व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या परिस्थिति के सम्बन्ध में उलझन का अनुभव करता है। यह तनाव एक जाति से दूसरे जाति, एक वर्ग से दूसरे वर्ग, एक संप्रदाय से दूसरे संप्रदाय के बीच होती है। सामाजिक तनाव के कई प्रकारों की चर्चा मनोवैज्ञानिकों ने की है, जिसमे कुछ निम्नलिखित हैं-

1. जातीय तनाव (caste tension) –

भारत में जातिवाद (castism) जैसी सामाजिक बुराई (social evil) अपनी चरम सीमा पर है। भारतीय समाज का स्वरुप कुछ ऐसा है जो ऊपर से संगठित दिखाई देता है परन्तु भीतर से जाती के नाम पर विभाजित है। सामान्यतः यहां दो तरह की जातियाँ हैं- उच्च-जाति तथा पिछड़ी-जाति। उच्च-जाति के लोग पिछड़ी-जाति के लोगों को नीचे समझते हैं, उनके अधिकार एवं रोटी को छीनने की कोशिश करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पिछड़ी-जाति के लोगों के साथ सामाजिक कार्यक्रमों के अवसर पर खुल कर उच्च-जाति के लोग भेद-भाव बरतते हुए अपने को श्रेष्ट बताते हैं। यहां तक की गाँव के सभी लाभदायक पदों (मुखिया, प्रमुख, सरपंच, ग्राम सेवक) आदि पर वे स्वयं ही कब्ज़ा कर रखते हैं। इन सबका परिणाम यह होता है कि उच्च-जाति एवं पिछड़ी-जाति के बीच में सामाजिक तनाव उत्पन्न हो जाता है जिसे हम जातीय-तनाव की संज्ञा देते हैं। यदि इस तरह के जातीय-तनाव को रोका नहीं गया तो फिर बाद में वह जातीय दंगे का रूप ले लेता है।

2. वर्ग-तनाव (class tension) –

आर्थिक हितों के आधार पर आधुनिक समाज को दो वर्गों में बांटा जा सकता है- शोषक वर्ग तथा शोषित वर्ग। सामाजिक एवं आर्थिक शक्ति के आधार पर आधुनिक समाज को दो वर्गों में बांटा गया है - सबल वर्ग (advantaged group) तथा असबल वर्ग (disadvantaged group)। शोषक वर्ग जैसे - पूंजी पति लोग, शोषित वर्ग जैसे- श्रमिक वर्ग या मज़दूर वर्ग का खुलेआम शोषण करते हैं। श्रमिक या मजदूर के खून-पसीने की कमाई मार कर पूंजी पति लोग अपने मौज-मस्ती करते हैं। उधर श्रमिक या मजदूर वर्ग के लोग दिन रात की कड़ी मेहनत के बावजूद भी अपना पेट आंसू पी कर ही भरते हैं जबकि पूंजी पति लोग हर तरह की मौज मस्ती कर पानी के सामान धन बहाते जाते हैं। मजदूर वर्ग पूंजी पति वर्ग से अपनी मेहनत की कमाई का

अधिक से अधिक भाग लेना चाहते हैं जबकि पूंजी पति वर्ग इस कमाई का अधिक से अधिक भाग अपने ही पास रखना चाहता है। इसका परिणाम यह होता है कि मजदूर वर्ग तथा पूंजी पति वर्ग में तनाव तथा संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसे वर्ग-तनाव की संज्ञा दी जाती है। करीब-करीब ऐसी ही दरारें सबल तथा असबल वर्ग के बीच भी देखी जाती है जिनसे इन दोनों वर्गों के बीच वर्ग-तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

3. सामाजिक-तनाव (communal tension) –

दो या दो से अधिक सम्प्रदाय के लोगों के बीच सामाजिक या धार्मिक विश्वासों में विभिन्नता के फलस्वरूप जो तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है उसे सामाजिक तनाव की संज्ञा दी जाती है। भारतीय समाज में हिन्दू एवं मुसलमान के बीच इस प्रकार का तनाव अक्सर उत्पन्न हो जाता है। इन दोनों समुदाय के लोगों में किसी विषय पर धार्मिक विश्वाशों एवं ख्यालों में कभी-कभी अंतर हो जाता है जिससे तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पंजाब में सिख एवं हिन्दू संप्रदाय के लोगों में भी जो सांप्रदायिक-तनाव बना हुआ है उसका प्रमुख कारण कुछ सामाजिक एवं धार्मिक विश्वाशों में विभिन्नताएं ही हैं।

4. राजनैतिक-तनाव (political tension) –

राजनैतिक तनाव सामाजिक तनाव का एक प्रमुख प्रकार है। देश की विभिन्न राजनैतिक पार्टियों में उनके आदर्श, सिद्धांत, लक्ष्य एवं कार्यक्रमों में विभिन्नता के कारण जो तनाव उत्पन्न हो जाता है उसे राजनैतिक-तनाव कहा जाता है। इस प्रकार का तनाव संसार के सभी देशों में है क्यूंकि राजनितिक पार्टियां सभी देशों में होती हैं। राजनैतिक पार्टी जनता के सामने अपने को श्रेष्ट तथा अपने विरोधी पार्टी को तुच्छ साबित करने के लिए झूठा प्रचार भी करने लगती है। वो अपने आदर्शों को जनता का आदर्श तथा अपनी नीतियों को जनता की नीति बता कर अपने को श्रेष्ट तथा विरोधी पार्टी के आदर्शों एवं नीतियों को घटिया एवं जनता विरोधी बता कर अपना उल्लू सीधा करती है। ऐसी स्थिति में विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के बीच एक तरह का तनाव उत्पन्न हो जाता है जिसे राजनैतिक तनाव की संज्ञा दी जाती है। भारतीय राजनीति में इस ढंग के तनाव की चरम सीमा आम चुनाव के समय स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। कभी-कभी दो राजनैतिक पार्टियों के कार्यकर्ताओं को आपस में टकराव भी होता देखा जाता है।

5. प्रजातिय-तनाव (racial tension) –

प्रजातीय-तनाव भारत जैसे देश में काम तथा अमेरिका, अफ्रीका, जापान जैसे देशों में अधिक देखा गया है। जब दो प्रजाति के व्यक्तियों में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक कारणों से मदभेद होने के कारण हीनता या श्रेष्टता की भावना उत्पन्न हो जाती है तो इससे इन दोनों प्रजातियों में एक तरह के तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसे प्रजातीय तनाव कहा जाता है। अमेरिका में गोरे या श्वेत अमेरिकन एवं काले या नीग्रो अमेरिकन के बीच सामाजिक एवं आर्थिक स्तरों में विभिन्नता के कारण प्रायः एक तनाव की स्थिति रहती है। प्रायः गोरे अमेरिकन अपने को श्रेष्ट, बुद्धिमान एवं अच्छे वर्ग के समझते हैं तथा नीग्रो को बुद्धिहीन, मुर्ख आदि समझ कर उसकी

उपेक्षा करते हैं। इससे इन लोगों के बीच एक तरह के तनाव की स्थिति बानी रहती है जिसे प्रजातीय-तनाव कहा जाता है। अफ्रीका में भी श्वेत एवं श्याम प्रजातियों के लोगों में इस प्रकार का तनाव देखा जाता है।

स्पष्ट है की सामाजिक तनाव के कई रूप होते हैं। इनमे से सांप्रदायिक-तनाव, जातीय-तनाव तथा राजनैतिक-तनाव भारत जैसे देश में अधिक देखने को मिलता है।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com